Living the Lotus

Buddhism in Everyday Life

8
2025
VOL. 239

Rissho Kosei-kai of Hawaii Hosts Bon Dance Festival on July 11–12

Living the Lotus
Vol. 239 (August 2025)

Senior Editor: Keiichi Akagawa
Editor: Sachi Mikawa
Copy Editor: Parmita Shekhar, Prakash K

Living the Lotus is published monthly by Rissho Kosei-kai International, Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124 FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international
@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य सस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस्ः बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

अन्य लोगों की केवल प्रशंसा करें

निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ

मनुष्य के पालन-पोषण का आधार

जिन शिक्षकों से मैंने उनके लेखन और अन्य स्रोतों के माध्यम से सीखा है, उनमें से दो ऐसे हैं जिनका दर्शन एक जैसा है। उनका मानना है कि शिक्षा का अर्थ उपदेश देना नहीं है; शिक्षा देना ही प्रशंसा करना है। उनमें से एक, प्रोफेसर नोबुजो मोरी (1896-1992), तो यहाँ तक कहते हैं कि शिक्षकों को केवल प्रशंसा करने के लिए ही अपना मुँह खोलना चाहिए।

उदाहरण के लिए, अगर बच्चों ने स्कूल के शू लॉकर में अपने जूते व्यवस्थित ढंग से नहीं रखे हैं, तो शिक्षक का काम है कि जब छात्र न देख रहे हों, तब उन्हें व्यवस्थित करें। जैसे-जैसे बच्चों को अपने जूते व्यवस्थित रूप से रखने की आदत हो जाती है, वे धीरे-धीरे खुद ही अपने जूते शू लॉकर में व्यवस्थित रूप से रखने लगते हैं, और फिर शिक्षक छात्रों की प्रशंसा करते हैं। शिक्षा और मार्गदर्शन से मोरी का यही तात्पर्य है।

इसी तरह, प्रोफेसर को हिरासावा (1900-1989, क्योतो विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष) ने कहा कि "शिक्षा दूसरों की प्रशंसा करने का अध्ययन है," और प्रशंसा देने के महत्व के बारे में कहा, "सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि लोगों में सर्वश्रेष्ठ को बाहर लाया जाए और फिर उनमें खुशी, साहस और आशा पैदा की जाए" (इकियो क्यो मो योरोकोंडे [आइए हर दिन खुशी से जिएं], चिची पब्लिशिंग, 1995)।

मैंने पहले भी कई बार इंसानों के पालन-पोषण के महत्व का जिक्र किया है, और लिखा है, "आइए ऐसे लोगों का पालन-पोषण करें जिनके मन में करुणा हो" और "आइए ऐसे लोगों का पालन-पोषण करें जो भविष्य की जिम्मेदारी उठा रहे हैं।" ऐसा इसलिए है क्योंकि हर इंसान के दिल में मौजूद दयालुता की सुंदरता हमारे खूबसूरत ग्रह पृथ्वी की रक्षा करती है और इस पर सद्भाव से रहने वाले सभी जीवों को खुशियाँ प्रदान करती है। हालाँकि, ये दोनों व्यक्ति, जो शिक्षा के विशेषज्ञ और धर्म व दर्शन के जानकार हैं, कहते हैं कि युवाओं के पालन-पोषण का आधार उनकी प्रशंसा करना है।

प्रोफेसर हीरासावा ने यह भी कहा, "आपके मन की गहराई में, आपके ज्ञान से कई गुना ज्यादा अद्‌भुत चीजें छिपी हैं। चाहे कुछ भी हो, आत्मविश्वास बनाए रखें और चीजों को शानदार ढंग से करें।" अगर ये शिक्षाप्रद अर्थों में प्रशंसा के शब्द हैं, तो मुझे लगता है कि लोगों को आगे बढ़ाने का मतलब है बुद्ध प्रकृति के प्रति जागरूकता को प्रोत्साहित करना, और उनकी प्रशंसा का मतलब है उनके बुद्ध प्रकृति में विश्वास करना।

बुद्ध प्रकृति में विश्वास और आदर

वैसे, दूसरों की तारीफ करना मुश्किल है। असल में, हम ज्यादातर डाँटते या चिढ़ाते ही हैं, है ना? एक कहावत है कि डाँटना उतना ही बेअसर है जितना "वसंत विषुव के बाद गेहूँ में खाद डालना, और बीस साल की उम्र के बाद माता-पिता की राय।" बच्चों को लगभग तीन साल की उम्र तक ही डाँट-डपट कर बड़ा किया जा सकता है। उसके बाद, और खासकर जब वे बड़े हो जाते हैं, तो आप उन्हें चाहे जितना भी डाँटें या उपदेश दें, जरूरी बातें तब तक नहीं समझा पाएँगे जब तक कि वे उनके दिमाग में पहले से ही न बैठ जाएँ।

तो हमें क्या करना चाहिए? जैसा कि इसोरोकू यामामोटो (1884-1943, शाही जापानी नौसेना के एक मार्शल एडमिरल) ने कहा था, "लोग तभी प्रेरित होते हैं जब आप उन्हें दिखाते हैं, उन्हें बताते हैं, उन्हें प्रयास करने देते हैं, और उनकी प्रशंसा करते हैं।" मेरा भी मानना है कि दूसरों को डाँटने के बजाय, हमें स्वयं उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए और जब वे सफल हों तो उनकी प्रशंसा करनी चाहिए, जिससे उनके मन को प्रेरणा मिलेगी। वास्तव में, इस उद्धरण का उत्तरार्द्ध आगे कहता है, "लोग तब तक सफल नहीं होंगे जब तक आप उनके प्रयास करते समय कृतज्ञतापूर्वक उन पर नजर नहीं रखेंगे और उन्हें यह नहीं दिखाएँगे कि आप उन पर काम करने के लिए भरोसा करते हैं।" आखिरकार, दूसरों के बुद्ध स्वरूप में पूर्ण विश्वास और आदर का भाव मानव उत्थान के लिए महत्वपूर्ण है। यहाँ हम उस प्रेम और विश्वास को भी देख और महसूस कर सकते हैं जो कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से "मुझे तुम्हारी जरूरत है" कहकर व्यक्त करता है। इस तरह की बातचीत दूसरे लोगों को उनके स्वयं के मूल्य का एहसास कराती है और उन्हें जीने का आनंद, आशा और साहस देती है। ऐसी बातचीत उनके मन को उस व्यक्ति जैसा बनने की इच्छा की ओर भी निर्देशित करती है जिसे उनकी जरूरत है।

एक धर्म केंद्र के पूर्व मंत्री ने कहा, "सदस्यों को उनके श्रवण से प्राप्त हुए पुण्यों के बारे में बताकर, मैं उनकी प्रशंसा कर रहा हूँ।" इससे हमें यह महत्वपूर्ण शिक्षा मिलती है कि स्वयं और दूसरों के बुद्ध स्वरूप में पूर्ण विश्वास और सम्मान के लिए, हमारा मन ईमानदार और निष्कपट होना चाहिए। अन्यथा, हम दूसरों की सच्ची प्रशंसा नहीं कर सकते।

हम जो अपने परिश्रमपूर्ण दैनिक अभ्यासों के माध्यम से मानव जाति को ऊपर उठाने की आशा करते हैं, साथ ही अपनी मानवता को भी आगे बढ़ाते हैं, हमें भी बुद्ध से सदैव प्रोत्साहन और प्रशंसा प्राप्त होती रहती है।

कोसेइ, अगस्त 2025

यदि आप बुद्ध की शिक्षाओं के माध्यम से स्वयं को बदलने का प्रयास करेंगे तो आपका जीवन बदल जाएगा

सिमी हंडा   रिश्शो कोसेई-काई, दिल्ली

आप रिश्शो कोसेई-काई में कब और क्यों शामिल हुए?

अक्टूबर 2004 में मेरे एक परिचित द्वारा परिचय कराए जाने के बाद मैं दिल्ली के रिश्शो कोसेई-काई (तब दिल्ली धर्म केंद्र के रूप में जाना जाता था) में शामिल हुई थी। इसमें शामिल होने की मेरी प्रेरणा मेरी आध्यात्मिक प्रगति की इच्छा से उपजी है। यह इच्छा उस राह से बहुत प्रभावित थी जिस पर अब तक मेरा जीवन चल रहा था।

मेरा जन्म 1965 में नई दिल्ली में हुआ था और मेरे माता-पिता ने मुझे बहुत लाड़-प्यार दिया, जिसके कारण छोटी उम्र से ही मुझमें चिड़चिड़ापन और आत्म-केंद्रित व्यक्तित्व विकसित हो गया। मेरी शादी चौबीस साल की उम्र में हुई और मुझे दो बेटे हुए। हालाँकि, मेरे व्यक्तित्व के कारण, मैंने अपने बच्चों को बहुत अधिक भावनात्मक कष्ट दिया। 1998 में मेरी गर्भाशय की सर्जरी हुई और मुझे ऑस्टियोपोरोसिस भी हो गया। 2001 में एक सड़क दुर्घटना में मेरी पैर टूट गयी और 2003 में पता चला कि मुझे कैंसर है। उसी वर्ष, मुझे अपने जीवन का सबसे गहरा दुःख तब हुआ जब मैंने अपनी प्यारी माँ को खो दिया। इन कठिन घटनाओं ने मुझे ऐसा महसूस कराया जैसे कि मैं लगातार दुर्भाग्य से ग्रस्त थी, और मैंने अपने भाग्य और परिस्थितियों को दोषी ठहराया।

हालाँकि, रिश्शो कोसेई-काई में शामिल होने के बाद, श्री प्रदीप सक्सेना, जो उस समय दिल्ली धर्म केंद्र के चेप्टर हेड थे, और रेव. मित्सुओ साईतो , जो उस समय साउथ एशिया डिवीज़न के निर्देशक थे, उनके साथ मुलाकात के कारण मेरे जीवन में नाटकीय बदलाव आया। जैसे-जैसे मैंने लोटस सूत्रा और रिश्शो कोसेई-काई की शिक्षाओं का गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया, मुझे हर मुलाकात और घटना को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखने के महत्व का एहसास हुआ। मुझे एहसास हुआ कि मुझे अपनी बदकिस्मती के लिए दूसरों या अपने परिवेश को दोष नहीं देना चाहिए। इसके बजाय, खुद को बदलना और सकारात्मक और दूरदर्शी नज़रिए से ज़िंदगी जीना ज़रूरी है। उस अंतर्दृष्टि ने मुझे अपने जीवन जीने के तरीके को बदलने में मदद की है।

यद्यपि तनावपूर्ण संबंधों के कारण मुझे अपने अभ्यास में कुछ वर्षों का विराम लेना पड़ा, फिर भी 2014 में मुझे दिल्ली के रिश्शो कोसेई-काई के लिए एरिया लीडर के रूप में नियुक्त किया गया। 2020 में, मैंने एक सरकारी अधिकारी के रूप में अपनी नौकरी से समय से पहले सेवानिवृत्ति ले ली, और मार्च 2023 में, मुझे दिल्ली के रिश्शो कोसेई-काई का चैप्टर हेड नियुक्त किया गया। तब से मैं अपने संघ के सदस्यों के साथ मिलकर हर दिन नए दृढ़ संकल्प के साथ प्रयास कर रही हूँ। अपने हृदय में कृतज्ञता और लोटस सूत्र को अपना दिशासूचक मानते हुए, मैं अविचल संकल्प के साथ बोधिसत्व साधना के मार्ग पर चलती हूँ।

चैप्टर हेड के रूप में अपनी वर्तमान भूमिका में आपको सबसे अधिक खुशी किस बात से मिलती है?

मुझे सबसे अधिक खुशी उन सदस्यों को देखकर होती है जो कभी कष्ट में थे या चिंताओं के बोझ तले दबे हुए थे, उन्हें लोटस सूत्र और रिश्शो कोसेई-काई की शिक्षाओं के द्वारा बचाया जा रहा है। उन्हें सचमुच खुश होते और फिर से मुस्कुराते हुए देखकर मेरा दिल खुशी से भर जाता है। ऐसा लगता है मानो पीड़ित हृदयों में रोपे गए करुणा के बीज धर्म कि वर्षा से पोषित होकर आनंद के पुष्प के रूप में खिल गए हों।

श्रीमती सिमी हांडा रिशो कोसेई-काई दिल्ली के सदस्यों से बात करती हुई।

2022 में, श्रीमती हांडा (सबसे बाईं ओर, पहली पंक्ति में) और अन्य गोहोनज़ोन, "भक्ति का केंद्र"प्राप्तकर्ता रिश्शो कोसेई -काई दिल्ली में गोहोनज़ोन प्रदान समारोह के बाद।

दिल्ली के रिश्शो कोसेई-काई में वर्तमान में किस प्रकार की गतिविधियाँ हो रही हैं?

हम दैनिक आधार पर सुबह और शाम सूत्र पाठ करते हैं और धर्म केंद्र में सेवाएं प्रदान करते हैं। दिन के समय, हम मुख्य रूप से होज़ा और लोटस सूत्र का अध्ययन सत्र आयोजित करते हैं। हम सामाजिक योगदान देने वाली गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, जैसे परिवार शिक्षा सेमिनार आयोजित करना और वृद्धाश्रम में जाना। विशेष रूप से, दिल्ली के रिश्शो कोसेई-काई के आसपास के क्षेत्र में कई बच्चों को गरीबी के कारण शिक्षा नहीं मिल पाती है और वे पढ़-लिख नहीं सकते हैं। इन बच्चों की सहायता के लिए, हम स्कूल की सामग्री और कपड़े दान करते हैं, और युवा नेता धर्म सेंटर और आस-पास के पार्कों में सप्ताह में तीन से चार बार हिंदी और अंग्रेजी पढ़ाते हैं। हमारा मानना है कि बच्चों के मन को ज्ञान और दया से पोषित करना करुणा के सबसे पवित्र कार्यों में से एक है।

क्या लोटस सूत्र की कोई विशेष शिक्षा आपके हृदय में अंकित है?

अतीत में फार्मासिस्ट के रूप में काम करने के कारण, मुझे हमेशा लोटस सूत्र के अध्याय 5 से “औषधीय जड़ी-बूटियों का दृष्टांत” में गहरी रुचि रही है। यह अध्याय बताता है कि यद्यपि इस संसार में विभिन्न प्रकार की घासें और विभिन्न आकार के वृक्ष हैं, फिर भी वर्षा उन सभी पर समान रूप से होती है, और प्रत्येक पौधा अपने अनोखे तरीके से बढ़ता है, सुंदर फूलों से खिलता है और अपनी प्रकृति के अनुसार फल देता है।

इसी प्रकार, यद्यपि हम मनुष्यों की योग्यताएं और विशेषताएं भिन्न हैं, फिर भी हम सभी बुद्ध की शिक्षाएं ग्रहण करने और जागृति प्राप्त करने में समान रूप से सक्षम हैं। प्रत्येक व्यक्ति में स्वाभाविक रूप से बुद्ध प्रकृति होती है और वह अपने मूल में अनमोल होता है। फिर भी, बहुत से लोग इस सच्चाई से अनजान हैं। नतीजतन, उनका आत्मविश्वास कम हो जाता है, वे आत्म-संदेह में पड़ जाते हैं और सकारात्मक जीवन जीने में असमर्थ हो जाते हैं।

यही कारण है कि अब मैं धर्म केंद्र के आसपास के बच्चों को “औषधीय जड़ी-बूटियों का दृष्टांत” ऐसे तरीके से पढ़ाने का प्रयास करती हूँ, जो उन्हें समझने में आसान हो। मैं आशा करती हूँ कि वे दूसरों से अपनी तुलना करके जीवन नहीं जिएंगे, बल्कि अपने अद्वितीय गुणों को संजोएंगे और अपने अपूरणीय जीवन में चमकेंगे। बुद्ध की असीम करुणा की वर्षा में प्रत्येक बच्चा अपने तरीके से खिले।

क्या रिश्शो कोसेई-काई की कोई विशेष शिक्षा आपको प्रिय है?

जब संस्थापक निवानो सोलह वर्ष के थे, तो उन्होंने टोक्यो जाने वाली रात्रिकालीन ट्रेन में छह प्रतिज्ञाएँ ली थी| उनमें से एक था, "दूसरों से कभी झगड़ा मत करो। चाहे मेरे साथ कितना भी बुरा व्यवहार क्यों न किया जाए, मैं इसे ईश्वर का संकेत मानकर सहन करूँगा।" मैं इन शब्दों को हमेशा अपने दिल में रखती हूँ।

2024 में रिश्शो कोसेई-काई की स्थापना की 86वीं वर्षगांठ मनाते हुए, सुश्री हांडा (दायें से दूसरी) रिश्शो कोसेई-काई दिल्ली के अन्य सदस्यों के साथ केक काटती हुई।

भविष्य में चाहे मुझे कितनी भी कठिनाई या विपत्ति का सामना करना पड़े, मैं उन्हें आगे बढ़ने के अवसर के रूप में स्वीकार करना चाहती हूँ और विश्वास करता हूँ कि बुद्ध मुझ पर नज़र रख रहे हैं। मैं स्वयं को प्रशिक्षित करना जारी रखूँगी, तथा हर चीज को बुद्ध के करुणामय मार्गदर्शन का हिस्सा मानकर स्वीकार करुँगी। मैं प्रत्येक चुनौती को जागृति के मार्ग पर एक कदम के रूप में लेती हूँ, तथा बुद्ध का ज्ञान रूपी प्रकाश मेरी यात्रा को प्रकाशित करता है।

रिश्शो कोसेई-काई के बारे में आपको सबसे आकर्षक क्या लगता है?

हमें अक्सर सिखाया जाता है कि होज़ा रिश्शो कोसेई-काई का "जीवन रक्त" है, और मेरे अपने अनुभव से, मेरा मानना है कि होज़ा अभ्यास का एक गहन रूप है। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ हम परस्पर बुद्ध की शिक्षाओं के माध्यम से जीवन को देखना और सोचना सीखते हैं तथा अपने चरित्र को निखारते हैं।

जब मैं इस संस्था में नयी थी, तो अपने संघर्षों के बारे में खुलकर बात करने और अपनी गलतियों को दूसरों के सामने स्वीकार करने के लिए मुझे बहुत हिम्मत की ज़रूरत होती थी। हालाँकि, जब हमें लगता है कि कोई सचमुच हमारी बात सुन रहा है और हमें समझ रहा है, तो हम अपनी सच्ची भावनाएँ व्यक्त करने में सुरक्षित महसूस करते हैं।

होज़ा में, संघ के सदस्य प्रत्येक व्यक्ति की पीड़ा को ईमानदारी से सुनते हैं जैसे कि वह उनकी अपनी पीड़ा हो, और

रिश्शो कोसेई-काई की स्थापना की वर्षगांठ समारोह के बाद, दिल्ली के सदस्य एक यादगार तस्वीर के लिए पोज़ देते हुए। सुश्री हांडा अग्रिम पंक्ति के मध्य में हैं।

हांडा परिवार 2023 में अपने छोटे बेटे की शादी का जश्न मना रहे हैं। सुश्री हांडा सबसे दाईं ओर हैं।

वे करुणामय समर्थन प्रदान करते हैं। इस पारस्परिक समर्थन और प्रोत्साहन के कारण हम बिना किसी डर के दिल खोल के अपने बातो को रख सकते हैं। बुद्ध की शिक्षाओं के अनुरूप स्वयं को बदलने का प्रयास करके, हम अपने जीवन को बदल सकते हैं और बुद्ध मार्ग पर चलने का आत्मविश्वास और साहस प्राप्त कर सकते हैं। इस कारण से, मेरा मानना है कि होज़ा, रिश्शो कोसेई-काई के सबसे आकर्षक पहलुओं में से एक है। होज़ा के पवित्र स्थान में ही धर्म जीवंत होता है, तथा साझा मानवता और पारस्परिक परिवर्तन के माध्यम से हमारे हृदय खिलते हैं।

अंत में, क्या आप हमारे साथ अपनी वर्तमान आकांक्षा और अपने अभ्यास के लिए भविष्य के लक्ष्यों को साझा कर सकते हैं?

मेरी सबसे बड़ी इच्छा दिल्ली में संघ के सदस्यों के साथ मिलकर काम करना जारी रखना है ताकि साहस और ईमानदारी के साथ बुद्ध की ज्ञान और करुणा की शिक्षाओं को साझा किया जा सके। धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ, मैं अगली पीढ़ी के लिए शिक्षा का समर्थन जारी रखने की भी आशा करता हूँ। इन प्रयासों के माध्यम से, मैं दिल्ली और भारतीय समाज के विकास में विचारपूर्ण सामाजिक जुड़ाव के माध्यम से योगदान देना चाहती हूँ। त्रिरत्नो - बुद्ध, धर्म और संघ - के प्रति गहरी श्रद्धा के साथ, मैं एक समय में एक हृदय से जागृति के प्रकाश को फैलाने की सेवा में अपना जीवन अर्पित करने की आकांक्षा रखती हूँ।

रिश्शो कोसेइ काइ की सुविधाएँ

निक्क्यो निवानो स्मारक संग्रहालय

क्या आप जानते हैं?

संग्रहालय में एक विशेष प्रदर्शनी कक्ष है जहाँ साल में कई बार थीम आधारित प्रदर्शनियाँ आयोजित की जाती हैं। संस्थापक, सह -संस्थापक और पुण्डरीक सूत्र जैसे विभिन्न विषयों पर प्रदर्शनियों का आयोजन करके, संग्रहालय एक ऐसा स्थान प्रदान करता है जहाँ आगंतुक नई अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं। प्रदर्शनी कक्ष में प्रवेश होरिन-काकू अतिथि कक्ष के बगीचे की ओर से है।

निक्क्यो निवानो स्मारक संग्रहालय, संस्थापक की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में 2006 में खोला गया था। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ आगंतुक संस्थापक से मिलते हैं, उनसे सीखते हैं और उनके पदचिन्हों पर चलते हैं।

संग्रहालय का केंद्रीय कक्ष मुख्य स्थान के रूप में कार्य करता है, जहाँ आगंतुक संस्थापक की जन्मभूमि, सुगानुमा, में प्रकृति को स्पर्श और अनुभव कर सकते हैं, विशेष रूप से चारों ऋतुओं में इसकी बदलती सुंदरता को। इस स्थान के चारों ओर, आगंतुक पाँच प्रदर्शनी कोनों से रूबरू होते हैं। वे क्रमवार कोनों का दौरा करके संस्थापक के जीवन का पता लगाते हैं। संस्थापक के कार्यालय का भी पूरी निष्ठा से पुनर्निर्माण किया गया है, और आगंतुकों को उन लेखन उपकरणों और फर्नीचर को करीब से देखने का अवसर मिलता है जिनका उपयोग संस्थापक कार्यालय में प्रतिदिन करते थे।

* इस सामग्री का कोई भी पुनरुत्पादन या पुनर्प्रकाशन व्यक्तिगत, गैर-व्यावसायिक और सूचनात्मक उपयोग के लिए पुनरुत्पादन के अलावा निषिद्ध है।

दूसरा समूह तीर्थयात्रा हॉल

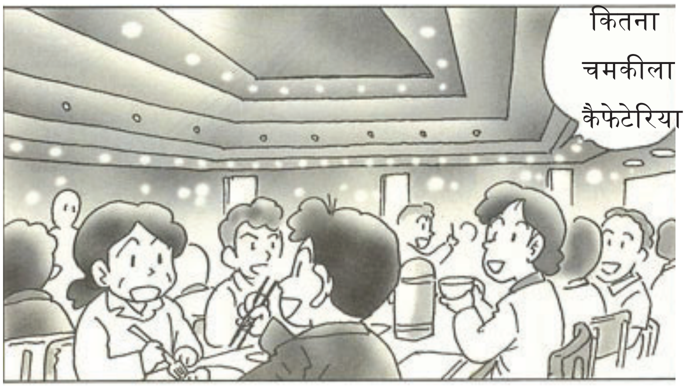

क्या आप जानते हैं?

गृध्रकूट पर्वत भारत में, तियानताइ पर्वत चीन में और हिएइ पर्वत जापान (शिगा प्रान्त) में स्थित है। गृध्रकूट पर्वत को उस स्थान के रूप में जाना जाता है जहाँ पुण्डरीक सूत्र की व्याख्या की गई थी। तियानताइ पर्वत भारत से चीन होते हुए जापान तक पुण्डरीक सूत्र के संचरण के इतिहास में भी एक महत्वपूर्ण स्थल है। तियानताइ बौद्ध धर्म के संस्थापक, साइचो (767-822), एक जापानी दूत के रूप में तांग, चीन गए और पुण्डरीक सूत्र के सिद्धांत को जापान ले आए।

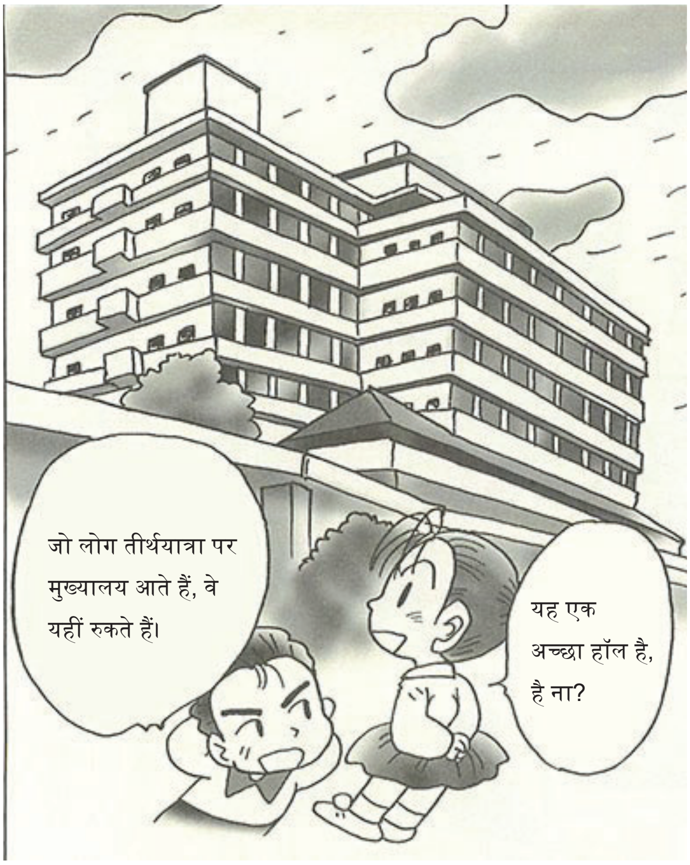

द्वितीय समूह तीर्थयात्रा हॉल एक आवास सुविधा के रूप में कार्य करता है जहाँ रिश्शो कोसेइ काइ के तोक्यो मुख्यालय में आने वाले सदस्य ठहरते हैं। यह सुविधा इतनी बड़ी है कि एक साथ कई लोगों के ठहरने की व्यवस्था है। हॉल की लॉबी की दीवार पर चित्रित सिरामिक पैनलों से बने एक भित्तिचित्र को सजाया गया है, जिस पर तीन पवित्र बौद्ध पर्वतों, दिव्य गरुड़ शिखर (गृध्रकूट पर्वत), तियानताइ पर्वत और हिएइ पर्वत की छवि अंकित है, जो संस्थापक के विचार का प्रतिनिधित्व करते हैं। लॉबी में संस्थापक निवानो की एक कांस्य प्रतिमा स्थापित है। इस भित्तिचित्र का निर्माण संस्थापक की इस इच्छा को दर्शाता है कि आगंतुक बौद्ध धर्म के मूल की ओर लौटें और शाक्यमुनि की भावना को अपनाएँ।

* इस सामग्री का कोई भी पुनरुत्पादन या पुनर्प्रकाशन व्यक्तिगत, गैर-व्यावसायिक और सूचनात्मक उपयोग के लिए पुनरुत्पादन के अलावा निषिद्ध है।

दूसरों से जुड़ना

यदि आप धर्म को साझा नहीं करते हैं, तो यह दुनिया खो जाएगी

निक्क्यो निवानो
रिश्शो कोसेइ काइ का संस्थापक

संयोग से, कोई भी शुरुआत में कुशलता से धर्म का प्रचार नहीं कर पाता। निश्चित रूप से, इसके लिए अनुभव की आवश्यकता होती है। यह जापानी तीरंदाजी की तरह है—शुरुआत में कोई भी एक ही तीर से निशाना नहीं साध पाता। ज्यादातर लोग निशाना चूक जाते हैं। लेकिन बार-बार अभ्यास करने से, वे समय-समय पर निशाना लगाने लगते हैं। बार-बार ऐसा करने से, वे ज्यादा बार निशाना साध पाते हैं।

लोगों को धर्म से जोड़ने या धर्म के साथ उनके जुड़ाव को बढ़ाने में मदद करने के मामले में भी यही बात लागू होती है। धर्म मंडल

की चर्चाओं के दौरान कई लोगों की चिंताओं को सुनकर और धर्म मंडल के संचालकों द्वारा दी गई सलाह को सुनकर, आप बार-बार लोगों को धर्म से जोड़ने और उनके जुड़ाव को गहरा करने में मदद करते हैं। जैसे-जैसे आप ऐसा करते रहेंगे, आप अंततः किसी के चेहरे को देखकर ही यह कह पाएँगे कि “आप इस तरह की समस्या से जूझ रहे हैं, है ना?” और आपमें यह कहने का आत्मविश्वास भी आएगा कि “अगर आप इस तरह से सोचेंगे, तो आपको जल्द ही खुशी मिल जाएगी।”

किसी भी स्थिति में, महत्वपूर्ण बात यह है कि लोगों के साथ धर्म को साझा करने का प्रयास करें। हो सकता है कि कुछ लोग आपकी बात सुनने की कोशिश भी न करें। कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं जो सुनकर भी समझ न पाएँ। फिर भी, आपको निराश नहीं होना चाहिए। बोधिसत्व की तरह, जो कभी सम्मान के अयोग्य नहीं होते, उन्हें लगातार पुकारने से, “आप बुद्ध बन सकते हैं!” आप दोनों के लिए मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होगा।

यह उल्लेखनीय है कि अपनी जागृति के समय, शाक्यमुनि बुद्ध ने स्वयं से सोचा, “यदि मैं इस गहन सत्य को साझा भी करूँ, तो भी इसे समझने में सक्षम कोई नहीं हो सकता है,” और वे दुविधा में थे: “क्या मुझे इसे सिखाना चाहिए, या इसे अपने तक ही रखना चाहिए?”

उसी समय, प्राचीन भारतीय धर्म के सर्वोच्च देवता ब्रह्मा ने बुद्ध के विचारों को समझ लिया और विलाप करते हुए बोले, “अरे नहीं! यह संसार नष्ट हो जाएगा! यदि कोई जागृत व्यक्ति सच्चे धर्म की शिक्षा नहीं देता, तो यह संसार नष्ट हो जाएगा।” तब ब्रह्मा बुद्ध के समक्ष प्रकट हुए और उनसे धर्म की शिक्षा देने की विनती की।

यह कहानी प्रारंभिक बौद्ध धर्मग्रंथों में से एक, आगम सूत्र में मिलती है, लेकिन पुण्डरीक सूत्र के “जादुई नगर का दृष्टांत” अध्याय में भी एक ऐसी ही घटना है, जिसमें ब्रह्मा राजाओं द्वारा तथागत सर्वोपरि ज्ञान से धर्म की शिक्षा देने की प्रार्थना का वर्णन इस प्रकार किया गया है:

“तब, पद्य में बुद्ध की स्तुति करने के बाद, प्रत्येक ब्रह्मा स्वर्गीय राजा ने कहा, ‘हे विश्व-पूज्य, कृपया धर्म का चक्र घुमाइए, जीवों को मुक्ति दीजिए, और निर्वाण का मार्ग खोलिए।’”

मुझे यह भी जोड़ना चाहिए कि ब्रह्मा ने आगम सूत्र में शाक्यमुनि बुद्ध से जो शब्द कहे थे—“यदि सच्चे धर्म का उपदेश नहीं दिया गया, तो यह संसार नष्ट हो जाएगा”—वे इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करते हुए मानवता के भाग्य पर भी लागू होते प्रतीत होते हैं। यदि दुनिया भर के लोग बुद्ध की शिक्षाओं—कम से कम, उनके सिद्धांत “थोड़ी इच्छाओं में संतुष्ट रहो”—को हृदय से नहीं अपनाते और उन पर अमल नहीं करते, तो मानवता विनाश के मार्ग पर चल पड़ेगी।

मैं चाहता हूँ कि रिश्शो कोसेइ काइ में सभी लोग यह समझें कि आपको एक गहन मिशन सौंपा गया है और आप पूरी लगन से इस शिक्षा के प्रसार में समर्पित हो जाएँ। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यही बोधिसत्व मार्ग है जो सभी सत्वों को मुक्त करने की बुद्ध की करुणामयी इच्छा के अनुरूप है।

Bodai no me o okosashimu (Kosei Publishing, 2018), p.81-83

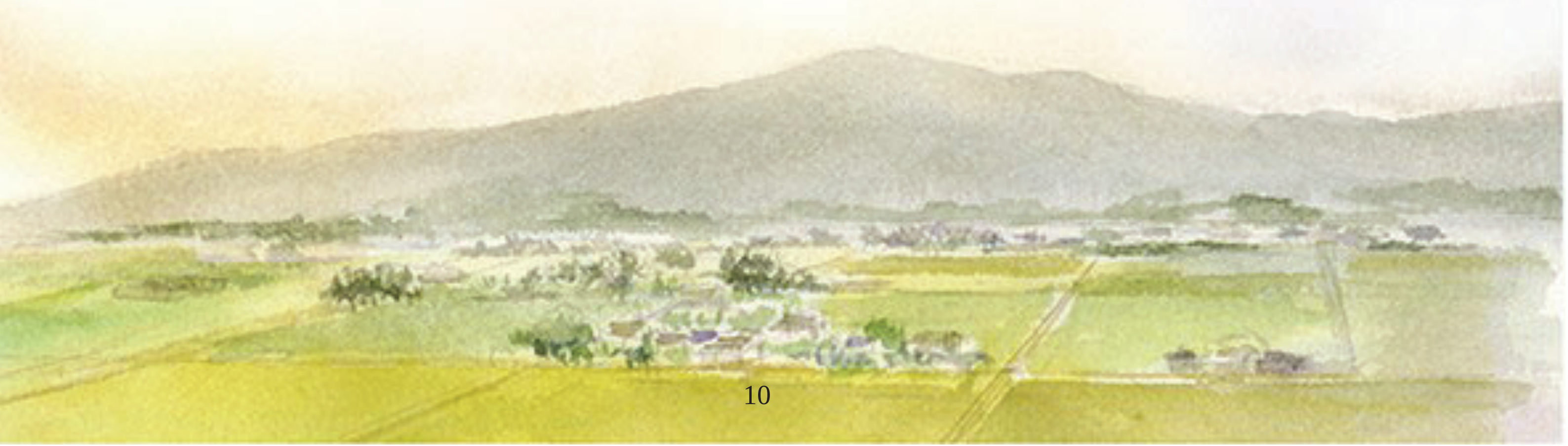

लोटस सूत्र को समझने का क्या अर्थ है

Rev. Keiichi Akagawa
Director, Rissho Kosei-kai International

नमस्कार दोस्तों, जापान में हर दिन बहुत गर्मी पड़ रही है। जापान में गर्मियां आर्द्र होती हैं, और यद्यपि हर साल ऐसा ही होता है, फिर भी इस मौसम में स्वस्थ रहना कठिन होता है। मुझे उम्मीद है कि आप सब अच्छे है।

इस महीने के संदेश में, प्रेसिडेंट निवानो ने प्रोफेसर हिरासावा के शब्दों को उद्धृत किया है, जिन्होंने कहा था, "शिक्षा दूसरों की प्रशंसा करने का अध्ययन है" और "सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि... उनमें खुशी, साहस और आशा का संचार किया जाए।" इसके बाद प्रेसिडेंट हमें सिखाते हैं कि “लोगों की प्रशंसा करने का अर्थ है उनके बुद्ध स्वभाव में विश्वास करना।”

जब मैंने यह अंश पढ़ा, तो मुझे फाउंडर निवानो के शब्द याद आ गए, जिन्होंने एक बार धर्म वार्ता में कहा था, "किसी को मुक्त करना उसे मानसिक शांति और आशा देना है।" मुक्ति की इस परिभाषा को याद करने से मुझे एक बार फिर एहसास हुआ कि आध्यात्मिक विकास के लिए, हमारे पास आनंद, साहस, मन की शांति और आशा के आध्यात्मिक स्तंभ होने चाहिए जो हमें सुधार के लिए प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करें।

फाउंडर अपने जीवनकाल में हमें यह कहकर प्रोत्साहित करते थे, "ऐसा व्यक्ति बनना जो दूसरों के साथ कुशलता से जुड़ सके, यही लोटस सूत्र को सही मायने में समझने का अर्थ है।" हम अपने दैनिक जीवन में प्रत्येक मुलाकात को “करुणामय हृदय वाले लोगों को विकसित करने के अवसर” के रूप में कैसे देख सकते हैं? मैं अपने आप से यह प्रश्न पूछता रहना चाहता हूँ, और हमेशा की तरह इस महीने भी, मैं अपने सामने आने वाली प्रत्येक मुलाकात के लिए पूरे मन से समर्पित रहूँगा, तथा इस भावना के साथ ईमानदारी से प्रयास करूँगा कि मैं जहाँ भी हूँ, वही अभ्यास का स्थान है।

रेव. अकागावा (मध्य पंक्ति, एकदम बायीं ओर) और रिश्शो कोसेई-काई इंटरनेशनल (आरकेआई) के कर्मचारी सदस्य, टोक्यो स्थित आरकेआई कार्यालय में रिश्शो कोसेई-काई शिकागो के हेड श्रीमती योशिको मुराकामी (मध्य पंक्ति, मध्य में) और उनके परिवार तथा मित्रों का स्वागत करते हुए।

A Global Buddhist Movement

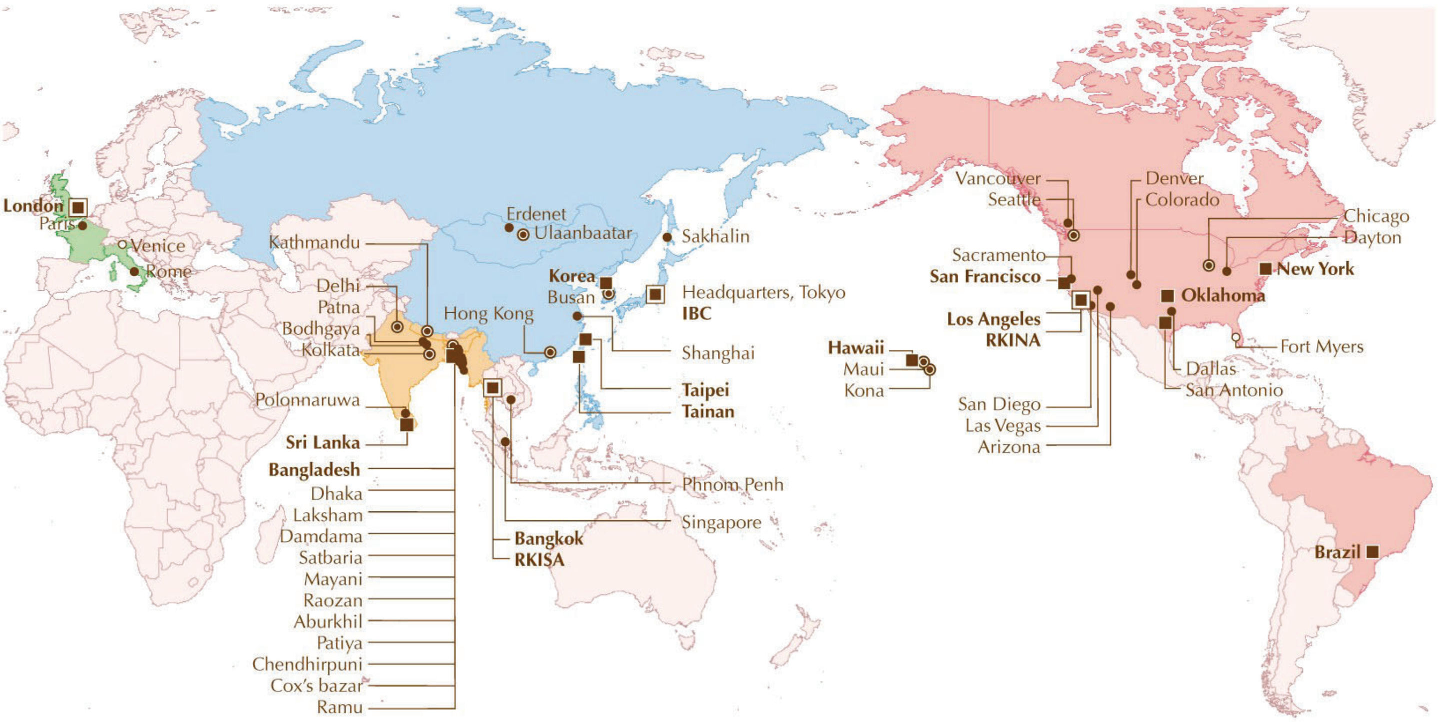

Information about local Dharma centers

facebook

X

We welcome comments on our newsletter Living the Lotus: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp